विषयानुक्रमणिका (हिन्दी विभाग)

१ सर्वज्ञ कथित तत्व रहस्य बाबत ६७ पृष्ठ १ से ३६ तक के नाम.

बाबत	नाम	पृष्ठ
१	जीवदया (जयणा) हम्मेशा पालनी चाहिये.	१
२	निरतर इंद्रिय वर्गका दमन करना.	२
३	सत्य वचन ही बोलना.	२
४	शील कबीभी छोडना नहि.	३
५	कबीभी कुशील जनके सग निवास करना नहि.	३
६	गुरुवचन कदापि लोपना नहि.	३
७	(अ) चपलता – अजयणासे चलना नहि.	३
,,	(ब) उद्भट वेष पहेरना नहि.	४
८	वक्र–विषम दृष्टिसे देखना नहि.	४
९	अपनी जीव्हा नियममें रखनी.	४
१०	विना विचारे कुछभी नहि करना.	५
११	उत्तम कुलाचारको कबीभी लोपन करना नहि.	५
१२	किसीको मर्मवचन कहेना नहि.	५
१३	किसीको कबीभी जूठा कलंक नहि देना.	६
१४	किसीकोभी आक्रोश करके कहेना नहि.	६
१५	सबके उपर उपकार करना.	६
१६	उपकारीका उपकार कभी भूलना नहि.	७
१७	अनाथको योग्य आश्रय देना.	७
१८	किसीके अगाडी दीनता दिखलानी नहीं.	९
१९	किसीकी भी प्रार्थनाका भग करना नहि.	१०
२०	दीन वचन बोलना नहि.	१०
२१	आत्मप्रशसा करनी नहि.	१०
२२	दुर्जनकी भी कबी निंदा नहि करनी.	११
२३	बहोत हंसना नहि.	१२
२४	वैरीका विश्वास करना नहि.	१३
२५	विश्वासूको कबीभी दगा देना नहि.	१५
२६	कृतघ्नता – किये हुवे गुणका लोप कबीभी नहि करना.	१७
२७	सद्गुणीको देखकर प्रसन्न होना.	१७
२८	जैसे तैसेका सग स्नेह करना नहि.	१८
२९	पात्रपरीक्षा करनी चाहिये.	१८
३०	अकार्य कबीभी करना नहि.	१९
३१	लोकापवाद प्रवर्तन हो वैसा नहि वर्त्तना.	१९

बाबत	नाम	पृष्ठ
३२	साहसीकपना कबीभी त्याग देना नहि.	१९
३३	आपात्ति वख्तभी हिम्मत रखकर रहना.	२१
३४	प्राणान्त तकभी सन्मार्गका त्याग करना नहि.	२१
३५	वैभव क्षय होजानेपरभी यथोचित दान करना.	२१
३६	अत्यत राग-स्नेह करना नहि.	२२
३७	वल्लभजनपरभी बार बार गुस्सा नहि करना.	२२
३८	क्लेश बढाना नहि.	२३
३९	कुसग नहि करना.	२३
४०	बालकसेभी हित वचन अगीकार करना.	२४
४१	अन्यायसे निवर्त्तन होना.	२४
४२	वैभवके वख्त खुमारी नहि रखनी.	२४
४३	निर्धनताके वख्त खेद भी न करना.	२५
४४	समभावसे रहना.	२५
४५	सेवकके गुण समक्ष कहेना.	२६
४६	पुत्रकी प्रत्यक्ष प्रशसा नही करनी	२६
४७	स्त्री की तो प्रत्यक्ष वा परोक्ष भी प्रशसा करनीही नहि.	२६
४८	प्रिय वचन बोलना.	२७
४९	विनय सेवन करना चाहिये.	२८
५०	दान देना.	२८
५१	दूसरेके गुणका ग्रहण करना.	२८
५२	औसरपर बोलना.	२९
५३	खल-दुर्जनकोभी जनसमाजकी अदर योग्य सन्मान देना.	२९
५४	स्व परहित विशेषतासे जानना	२९
५५	मत्र तत्र नहि करना.	२९
५६	दुसरे-पीरायेके घर अकोला नहि जाना.	३०
५७	की हुइ प्रतीज्ञा पालन करनी.	३०
५८	दोस्तदारसे छुपी वात न रखनी.	३०
५९	किसीकाभी अपमान नहि करना.	३१
६०	अपने गुणोंकाभी गर्व नहि करना.	३१
६१	मनमेंभी हर्ष नहि लाना.	३२
६२	पहिले सुगम, सरल कार्य शुरु करना.	३२
६३	पीछे बडा कार्य करना.	३२
६४	(परतु) उत्कर्ष नहि करना.	३२
६५	परमात्माका ध्यान करना.	३३
६६	दुसरेको अपने आत्माके समान जानना.	३४
६७	राग द्वेष करना नहि.	३५

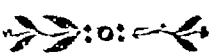

बाबत	नाम	पृष्ठ
२	सदुपदेशसार संग्रह–बाबत ९९	३७ से ५२
३	सार बोल संग्रह–बाबत १९	५२ से ५६
४	धर्मकल्प वृक्ष (याने) दानके चार प्रकार ...	५६ से ५९
५	सामान्य हित शिक्षा	५९ से ६६

६ बोधकारक दृष्टांतो पांच का संग्रहकी अनुक्रमणिका.

१	न्यायमें अन्याय करने पर शेठकी पुत्रीका ...	६६
२	धर्म करते अतुल धन प्राप्तिपर विद्यापतिका	७०
३	देना सिर रखनेमे लगते हुए दोष पर महीषका ...	७२
४	पाप रिद्धि पर	७३
५	मुग्ध शेठका	१२१

७ विविध विषयोके प्रश्नोत्तर ३५ ... ... ७५ से ८०

गुजराथी भाषा विभागनी अनुक्रमणिका

१	वैराग्यसार ने उपदेश रहस्य कलम २६३	८१ थी ११२
२	धर्मनी दश दिशा	११३ थी ११४

३ बोधकारक दृष्टांत (कथा) संग्रहनी अनुक्रमणिका.

१	कंबल अने संबल वृषभनी	११५
२	भाग्यहीन स्त्री पुरुषनी	११६
३	स्तुति अने निंदा सरखी गणवी-श्रेष्ठ ए विषे ...	११८
४	सकट परिसह उपर	११९
५	तत्काळ बुद्धि उपर रीछ अने मनुष्यनी	११९
६	स्वामीनु चित्तेच्छित काम करनार मंत्रीनी ...	१२०

४ अनेक विषयोना प्रश्नोत्तर २१ ... १२५ थी १३०

(एना आगळनी अनुक्रमणिका पाछळना पान ५ उपर जुवो)